संपादक का नोट

प्रिय भाइयों और बहनों, प्रभु की स्तुति हो। इस महीने, मैं अपना 70वां जन्मदिन मनाती हूं, और मैं अपने प्रभु और उद्धारकर्ता यीशु मसीह का पिछले वर्षों में मेरी रक्षा करने, मार्गदर्शन करने और आशीष देने के लिए, और मेरे जीवन की यात्रा में मेरे साथ बने रहने के लिए सदा आभारी हूं। धन्यवाद यीशु!

भजन संहिता 28:7 ''यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिये मेरा हृदय प्रफुल्लित है; और मैं गीत गाकर उसका धन्यवाद करूँगा।''

हम अपनी पूरी शक्ति से कब परमेश्वर की स्तुति कर सकते हैं?

- ✓ जब हम अपने लिए परमेश्वर के प्रेम और उन सभी आशीषों को याद करते हैं जो उन्होंने हमारे जीवन में बरसाई हैं।
- ✓ जब हमारे भीतर आभार और धन्यवाद का हृदय होता है।
- ✓ जब हम प्रभु पर भरोसा करते हैं और विश्वास करते हैं कि केवल वही हमारी ढाल है।

परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को एक सुंदर जीवन दिया है और हमें अपने स्वर्गीय "अब्बा" पिता कहलाने के योग्य बनाया है। वह बदले में हम से कुछ भी नहीं चाहते है, लेकिन केवल अपने पूरे दिल, दिमाग और आत्मा से उनकी स्तुति और आराधना करना है। जब हम अपने प्रभु परमेश्वर के लिए अपने बल का उपयोग करते हैं और उनकी स्तुति गाते हैं, तो हम आशीषित और दृढ़ होंगे।

भजन संहिता 138:3 ''जिस दिन मैं ने पुकारा, उसी दिन तू ने मेरी सुन ली, और मुझ में बल देकर हियाव बन्धाया।''

हमें हमेशा प्रभु से जुड़े रहना चाहिए, तब वह हमें अपने जीवन में सब कुछ करने की शक्ति देंगे, क्योंकि उनकी कृपा हम पर हमेशा बनी रहेगी। जब हमें प्रभु की इस शक्ति की कमी होती है, तभी हम आत्मारिक रूप से थक जाते हैं, और हम उनकी उपस्थिति से दूर होने के बहाने खोजने लगते हैं। जब हमारे प्राणों में प्रभु का बल नहीं होगा, तब हमें आत्मा का आनंद नहीं होगा, क्योंकि दुष्ट हमारे जीवनों से उस आत्मिक आनन्द को छीन लेता है। लेकिन जब आनंद की आत्मा हमारे भीतर है, तो हम पूरे दिल से गा सकते हैं *'प्रभु का आनंद मेरी ताकत है।'* हमारे प्रभु परमेश्वर हमें जो आनंद देते हैं, वह हमें उनकी आराधना करने और हमारे जीवन में सभी परिस्थितियों का सामना करने की शक्ति प्रदान करता है।

निर्गमन 15:1 ''तब मूसा और इस्राएलियों ने यहोवा के लिये यह गीत गाया। उन्होंने कहा, "मैं यहोवा का गीत गाऊँगा, क्योंकि वह महाप्रतापी ठहरा है; घोड़ों समेत सवारों को उसने समुद्र में पटक दिया है।''

जब मूसा और इस्त्राएलियों ने यहोवा की स्तुति और उसको दण्डवत् किया, तब परमेश्वर ने फिरौन की सेना को लाल समुद्र में डुबा दिया। बाइबिल में ऐसे कई उदाहरण हैं, जहाँ परमेश्वर स्तुति और आराधना के दौरान चमत्कारी कार्य करते है। स्तुति और आराधना में बहुत शक्ति होती है। इसलिए, जब हम स्तुति गाते हैं, और उनके पवित्र नाम की महिमा करने के लिए प्रभु की आराधना करते हैं, तो हमें गीत गाते, ताली बजाते और स्तुति करते नहीं थकना चाहिए। हमें अपने हृदयों को खोलना चाहिए और उनके लिए स्तुति गाना चाहिए, क्योंकि यह आनंद की आत्मा लाएगा, हमारी आत्माओं को दृढ़ करेगा, और हमें आत्मिक रूप से मजबूत करेगा।

हमारे अच्छे परमेश्वर हमेशा आपके जीवन को आज और हमेशा आपकी आत्मा में ताकत से भर दें, ताकि आप जो कुछ भी करते हैं उसमें परमेश्वर की महिमा हो।

मसीह में आपकी बहन,

पास्टर सरोजा म।

लूका 2:24 ''और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार : "पंडुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे" लाकर बलिदान करें।'' पुराने दिनों में परमेश्वर की आज्ञा के अनुसार, जो लोग पापबलि के लिए एक मेमने का बलिदान नहीं कर सकते थे, वे या तो पंडुकों का एक जोड़ा या कबूतर के दो बच्चे बलिदान कर सकते थे। लैव्यव्यवस्था 12:8 ''और यदि उसके पास भेड़ या बकरी देने की पूँजी न हो, तो दो पंडुकी या कबूतरी के दो बच्चे, एक तो होमबलि और दूसरा पापबलि के लिये दे; और याजक उसके लिये प्रायश्चित्त करे, तब वह शुद्ध ठहरेगी।'' इस्राएलियों के लिए यह परमेश्वर की आज्ञा थी।

यीशु के जन्म के बाद, आठवें दिन, उनके माता–पिता, यूसुफ और मरियम, बलिदान के रूप में चढ़ाने के लिए अपने साथ दो कबूतर लाए। लूका 2:24 ''और प्रभु की व्यवस्था के वचन के अनुसार : "पंडुकों का एक जोड़ा, या कबूतर के दो बच्चे" लाकर बलिदान करें।'' कल्पना कीजिए, वे कबूतर यीशु मसीह के लिए बलिदान चढ़कर कितने खुश हुए होंगे! यीशु मसीह अपने पिता के प्रिय पुत्र थे। स्वर्ग में, वह एक राजा की तरह रहे, वैभव में शासन करते रहे। वे वहां कितने खुश और आनंदित थे। लेकिन, जब उन्हें इस दुनिया में भेजा गया, तो वह एक बढ़ई के परिवार में मानव जाति के लिए एक बलि का मेम्ना बनने के लिए पैदा हुए। अब आप जानते हैं कि कबूतरों को यीशु मसीह के लिए बलि के रूप में चढ़ाए जाने पर खुशी क्यों हुई होगी!

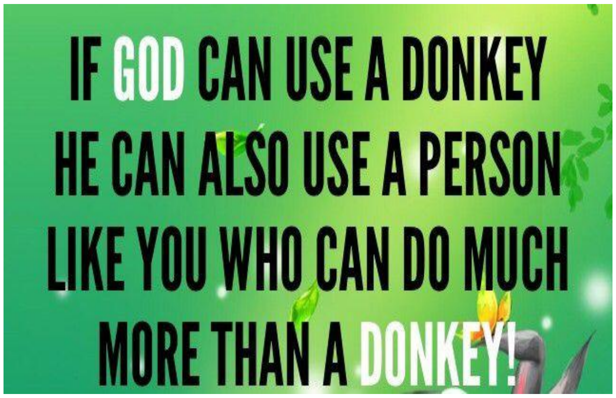

एक बार, जब यीशु मसीह बैतफगे से बैतनिय्याह की यात्रा कर रहे थे, तो उन्होंने अपने शिष्यों को जैतून के पहाड़ के पास गाँव में जाने के लिए कहा, एक घर में जहाँ एक गदही का बच्चा बंधा हुआ था, गदही के बच्चे को खोलने और उसे अपने पास लाने के लिए कहा। गदही का बच्चा, यानी एक युवा गधा, ऐसा होना चाहिए जिस पर अभी तक कोई नहीं

बैठा होगा। पुराने समय में, गधों का उपयोग धोबी गंदे लिनन के कपडे को धोने के लिए ले जाने के लिए करते थे। कल्पना कीजिए कि गधा कैसे यीशु के साथ उस पर बड़े गर्व के साथ चला होगा, क्योंकि वह राजाओं के राजा को ले जा रहा था। उस समय तक गदहे केवल मैले–कुचैले कपड़े के बोझ ढोने के काम आते थे, लेकिन इस दिन यीशु मसीह के बैठने के बाद

गधे का दर्जा ऊंचा हो गया होगा। लोग चिल्ला–चिल्लाकर यहोवा की स्तुति कर रहे थे, और अपने नए वस्त्र मार्ग में डालने लगे, कि वह बच्चा जो यीशु को उठाए हुए था उस पर चले। लोग आनन्दित हो रहे थे और परमेश्वर की स्तुति कर रहे थे और भजन गा रहे थे। यह देखकर, फरीसी जो यह देख रहे थे, क्रोध में इस विषय में बातें करने लगे, यह देखकर कि लोग यीशु की स्तुति और उपासना कर रहे हैं, और वे गदही के बच्चे को लाड़–प्यार करते हुए नहीं देख सकते। उन्होंने यीशु से कहा, कि वह अपने चेलों और लोगों से चुप रहने को कहे। परन्तु यीशु ने उत्तर दिया, 'मैं तुम से कहता हूँ, यदि ये चुप रहें, तो पत्थर तुरन्त चिल्ला उठेंगे।' बैतनिय्याह एक पहाड़ी स्थान था, और मार्ग पथरीला था। सोचिए अगर सारे पत्थर जोर से चिल्लाएंगे, तो वे कितने जोर से चिल्लाएंगे! फरीसियों ने तुरंत अपना मुंह बंद कर लिया। लूका 19:29–40 ''जब वह जैतून नामक पहाड़ पर बैतफगे और बैतनिय्याह के पास पहुँचा, तो उसने अपने चेलों में से दो को यह कहके भेजा, "सामने के गाँव में जाओ; और उसमें पहुँचते ही एक गदही का बच्चा जिस पर कभी कोई सवार नहीं हुआ, बँधा हुआ तुम्हें मिलेगा, उसे खोलकर ले आओ। यदि कोई तुम से पूछे कि क्यों खोलते हो, तो यह कह देना कि प्रभु को इसका प्रयोजन है।" जो भेजे गए थे, उन्होंने जाकर जैसा उसने उनसे कहा था, वैसा ही पाया। जब वे गदहे के बच्चे को खोल रहे थे, तो उसके मालिकों ने उनसे पूछा, "इस बच्चे को क्यों खोलते हो?" उन्होंने कहा, "प्रभु को इसका प्रयोजन है।" वे उसको यीशु के पास ले आए, और अपने कपड़े उस बच्चे पर डालकर यीशु को उस पर बैठा दिया। जब वह जा रहा था, तो वे अपने कपड़े मार्ग में बिछाते जाते थे। निकट आते हुए जब वह जैतून पहाड़ की ढलान पर पहुँचा, तो चेलों की सारी मण्डली उन सब सामर्थ्य के कामों के कारण जो उन्होंने देखे थे,

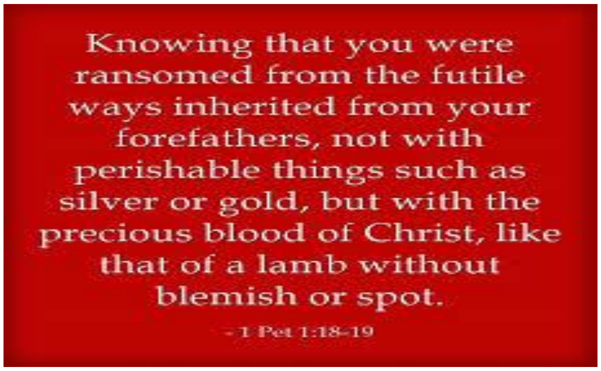

आनन्दित होकर बड़े शब्द से परमेश्वर की स्तुति करने लगी : "धन्य है वह राजा, जो प्रभु के नाम से आता है! स्वर्ग में शान्ति और आकाश मण्डल में महिमा हो!" तब भीड़ में से कुछ फरीसी उससे कहने लगे, "हे गुरु, अपने चेलों को डाँट।" उसने उत्तर दिया, "मैं तुम से कहता हूँ, यदि

ये चुप रहे तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।'' हम इस उपरोक्त पंक्ति में पढ़ते हैं, कि गदही का बच्चा यीशु मसीह को अपनी पीठ पर लादकर घोड़े के गर्व के साथ चला।

लैव्यव्यवस्था 5:7 '''"पर यदि उसे भेड़ या बकरी देने की सामर्थ्य न हो, तो अपने पाप के कारण दो पण्डुक या कबूतरी के दो बच्चे दोषबलि चढ़ाने के लिये यहोवा के पास ले आए, उनमें से एक तो पापबलि के लिये और दूसरा होमबलि के लिये।'' हमारे बलि के मेम्ने, यीशु मसीह, को इस दुनिया में भेजे जाने से पहले, यह इस्राएलियों के लिए परमेश्वर की आज्ञा थी कि उन्हें कबूतरों के एक जोड़े की बलि देनी थी – एक पापबलि के रूप में और दूसरा होमबलि के रूप में, अपने पापों की क्षमा के लिए इस बलिदान के बिना, वे अपने पापों से शुद्ध नहीं हो सकते थे। बलिदान केवल उनके पापों को कुछ समय के लिये धो सकता था, लेकिन वे कभी भी अपने पापों से निरंतर रूप से शुद्ध नहीं हो सकते थे। यही कारण है कि हमारे प्रभु यीशु मसीह को इस दुनिया में बलिदान मेम्ने के रूप में भेजा गया ताकि हम अपने पापों से निरंतर क्षमा प्राप्त कर सकें।

बपतिस्मा के बाद यीशु मसीह को पानी से बाहर आते देखकर, यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाले ने क्या

देखा? मत्ती 3:16 ''और यीशु बपतिस्मा लेकर तुरन्त पानी में से ऊपर आया, और देखो, उसके लिए आकाश खुल गया, और उसने परमेश्वर के आत्मा को कबूतर के समान उतरते और अपने ऊपर आते देखा।'' जब यीशु का बपतिस्मा हुआ और वह पानी से बाहर आएं, तो यूहन्ना ने देखा कि परमेश्वर की आत्मा एक कबूतर के रूप में यीशु पर ठहरी है। याद रखें, बलिदान देना आसान नहीं है, बलिदान देने के लिए साहसी होना जरूरी है। यह साहस कबूतर में था। हम देखते हैं कि परमेश्वर का आत्मा कबूतर के रूप में यीशु पर उतरा। हम यह भी जानते हैं कि यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी व्यक्तिगत सेवकाई शुरू करने से पहले उनकी आत्मारिक शक्ति प्राप्त होने तक प्रतीक्षा करने के लिए कहा था। आत्मारिक शक्ति क्या है? यह वह शक्ति है जो स्वर्ग से उतरती है, वही शक्ति जो कबूतर के रूप में यीशु मसीह पर उतरी थी। प्रभु परमेश्वर ने कबूतरों/पण्डुकों को हमारे पापों के लिए बलिदान के रूप में चुना था। उन दिनों लोगों के पास बलि के लिए बैल/भेड़ के बच्चे खरीदने के साधन नहीं थे। हमारे प्रभु यीशु मसीह इस दुनिया में कमजोर और शक्तिहीन लोगों के लिए आए जो अपने लिए कुछ नहीं कर सकते थे। बैतहसदा तालाब में वह आदमी 38 साल से पड़ा हुआ था, इंतजार कर रहा था कि कोई उसे उठाकर कुण्ड में डाल दे, जब स्वर्गदूत आकर उस पानी को हिलाये। जिस स्त्री को 12 वर्ष से लहू बहने का रोग था, उसने यीशु के वस्त्र के आंचल को छूआ और वह चंगी हो गई। यीशु लकवे के रोगी को चंगा करने के साथ–साथ उस

व्यभिचारिणी को छुड़ाने आए था जिसे पत्थरों से मारा जाना था। यीशु इस दुनिया में उनके लिए आए जिनके पास उनकी देखभाल करने वाला या उनकी मदद करने वाला कोई नहीं था। यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने कबूतर को स्वर्ग से ऊपर उतरते देखा, यीशु मसीह पर, जब वह बपतिस्मा ले रहे थे और पानी से बाहर आ रहे थे। हमारे जीवन में भी, हमें परमेश्वर के लिए जीने और उनके लिए कार्य करने की आवश्यकता है। हमें प्रभु की आत्मारिक शक्ति की आवश्यकता है, जिसके बिना हमारे जीवन की अन्य सभी शक्तियाँ व्यर्थ हैं। क्रूस उठाने के लिए, हमें परमेश्वर का आत्मिक अभिषेक प्राप्त करना चाहिए। तभी हम इस दुनिया में अपनी दौड़ जीत सकते हैं।

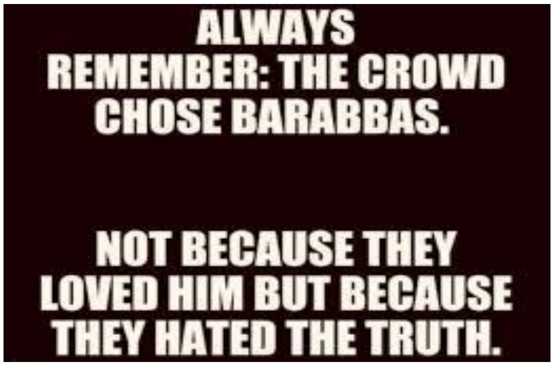

हम देखते हैं कि कैसे स्तिफनुस को आत्मारिक शक्ति की आशीष मिली थी। यद्यपि लोगों ने उसे पत्थरों से मार डाला, तौभी वह मृत्यु से नहीं डरता था। वह पवित्र आत्मा से भरा हुआ था, और उसका चेहरा एक स्वर्गीयदूत के चेहरे की तरह चमक रहा था। प्रेरितों के काम 7:55–60 ''परन्तु उसने पवित्र आत्मा से परिपूर्ण होकर स्वर्ग की ओर देखा और परमेश्वर की महिमा को और यीशु को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखकर कहा, "देखो, मैं स्वर्ग को खुला हुआ, और मनुष्य के पुत्र को परमेश्वर के दाहिनी ओर खड़ा हुआ देखता हूँ।" तब उन्होंने बड़े शब्द से चिल्लाकर कान बन्द कर लिए, और एक साथ उस पर झपटे; और उसे नगर के बाहर निकालकर उस पर पथराव करने लगे। गवाहों ने अपने कपड़े शाऊल नामक एक जवान के पाँवों के पास उतार कर रख दिए। वे स्तिफनुस पर पथराव करते रहे, और वह यह कहकर प्रार्थना करता रहा, "हे प्रभु यीशु, मेरी आत्मा को ग्रहण कर।" फिर घुटने टेककर ऊँचे शब्द से पुकारा, "हे प्रभु, यह पाप उन पर मत लगा।" और यह कहकर वह सो गया।'' आपको क्या लगता है कि स्तिफनुस ने किससे शक्ति, बल और प्रेम प्राप्त किया? स्वर्ग से स्तिफनुस पर आत्मारिक शक्ति की वर्षा हुई। इसके बिना, वह इतना कष्ट सहन नहीं कर पाता। केवल परमेश्वर की शक्तिशाली आत्मारिक शक्ति के कारण ही वह यह सब सहन कर सका। स्तिफनुस ने अपने उत्पीड़कों से कहा कि वह प्रभु का चमकता और महिमामय चेहरा देख सकता है। लोग इसे सहन नहीं कर सके; वे व्याकुल हो गए, और उन्होंने क्रोध से अपने कान बन्द कर लिए। उन्होंने स्तिफनुस पर एकता के साथ आक्रमण किया और उसे पत्थरों से मार डाला। परन्तु स्तिफनुस ने घुटने टेके और ऊँचे स्वर में प्रभु से पुकारा कि यह पाप उन पर न लगे। यह वह आत्मारिक शक्ति थी जो स्तिफनुस पर उतरी थी, और उसने आनन्दपूर्वक अपने सारे कष्ट उठा लिए।

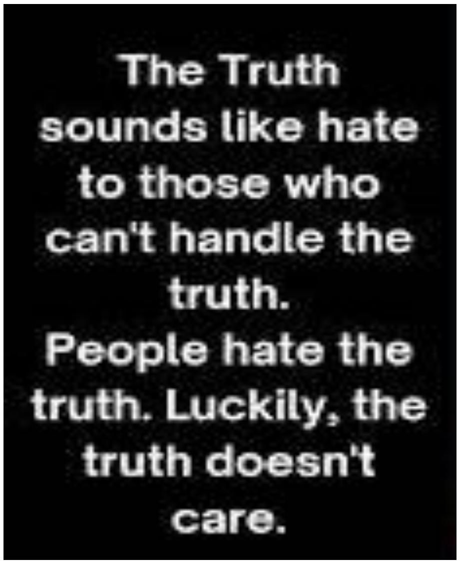

यहाँ तक कि प्रेरित पौलुस के जीवन में भी उसने हर चुनौती का सामना परमेश्वर की आत्मिक सामर्थ्य से किया। 2 तीमुथियुस 4:6–8 ''क्योंकि अब मैं अर्घ के समान उंडेला जाता हूँ, और मेरे कूच का समय आ पहुँचा है। मैं अच्छी कुश्ती लड़ चुका हूँ, मैं ने अपनी दौड़ पूरी कर ली है, मैं ने विश्वास की रखवाली की है। भविष्य में मेरे लिये धर्म का वह मुकुट रखा हुआ है, जिसे प्रभु, जो धर्मी और न्यायी है, मुझे उस दिन देगा, और मुझे ही नहीं वरन् उन सब को भी जो उसके प्रगट होने को प्रिय जानते हैं।'' हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस के कष्ट बहुतायत से थे, फिर भी उसने घोषणा की कि उसने विश्वास बनाए रखते हुए दौड़ पूरी की। धार्मिकता का मुकुट न केवल प्रेरित पौलुस को दिया जाता है, बल्कि उन सभी को दिया जाता है जो दौड़ में दौड़ते हैं और विश्वास में इसे पूरा करते हैं। मत्ती 24 अंत समय के दुख और दर्द की व्याख्या करता है। वचन कहता है कि यद्यपि दो साथ होंगे, एक ले लिया जाएगा। वे कौन होंगे जिन्हें ले जाया जाएगा? वे वे हैं जिन्होंने प्रभु से आत्मारिक शक्ति प्राप्त की है। वचन कहता है, *'प्रार्थना करो कि ऐसा दूध पीते बच्चे की मां के साथ न हो, कहीं ऐसा न हो कि मां उठा ली जाए और बच्चा पीछे रह जाए। प्रार्थना करो कि यह सब्त का दिन न हो।'* हम देखते हैं कि प्रेरित पौलुस परमेश्वर से प्राप्त आत्मारिक शक्ति के कारण अपनी दौड़ पूरी कर सका। हमारे जीवन में भी, अंत के समय में, हमें परमेश्वर की खोज में इधर–उधर भटकना नहीं चाहिए। हम सत्य को जानते हैं, और परमेश्वर ने हमें बुद्धि और ज्ञान दिया है, इसलिए हमारे जीवन में आत्मारिक शक्ति बहुत महत्वपूर्ण है। यदि हमारे पास आत्मारिक बुद्धि और ज्ञान नहीं है, तो हम इधर–उधर भागते हुए गिरेंगे। हम शत्रु के लिए आसान शिकार बन जाएंगे। यदि हमारे भीतर पवित्र आत्मा है, तो आत्मा हमारी अगुआई करेगा और हमारे जीवनों में परमेश्वर के हाथ को देखने में हमारी मदद करेगा, वैसे ही जैसे स्तिफनुस ने यीशु को अपने पिता के दाहिनी ओर खड़े हुए देखा था, उनकी सारी महिमा में। परमेश्वर की इच्छा है कि इस दुनिया में अंत समय आने से पहले 'वचन' लोगों में दूर–दूर तक फैल जाए। हमारे लिए यह महत्वपूर्ण है कि हम परमेश्वर के वचन को स्वीकार करें, और हम परमेश्वर के सामने एक गधा बनें। जब हम खाली होते हैं तभी वह हमें अपनी आत्मारिक शक्ति से भर सकते है। याद रखें कि यीशु ने क्या कहा था, *"मैं तुम से कहता हूँ यदि ये चुप रहे तो पत्थर चिल्ला उठेंगे।"* यदि हम परमेश्वर का कार्य करने से इनकार करते हैं, तो प्रभु परमेश्वर अपना कार्य करने के लिए किसी और को उठाएंगे। प्रभु के लिए कुछ भी असंभव नहीं है। इसलिए, हमारे लिए परमेश्वर की आत्मारिक शक्ति प्राप्त करना महत्वपूर्ण है।

रोमियों 8:35 ''कौन हम को मसीह के प्रेम से अलग करेगा? क्या क्लेश, या संकट, या उपद्रव, या अकाल, या नंगाई, या जोखिम, या तलवार?'' जब हम खाली होते हैं, तो ये परीक्षाएं और

क्लेश हमें परमेश्वर से दूर ले जाएंगे। लेकिन, जब हम परमेश्वर के प्रेम और आत्मारिक शक्ति से भर जाते हैं, तो उपरोक्त में से कोई भी हमें परमेश्वर से अलग नहीं कर सकता। अंत समय के दौरान, हम सभी को ऐसी स्थिति का सामना करना पड़ेगा, जहाँ हमें यह तय करना होगा कि किसे चुनना है और कहाँ जाना है। उनमें से बहुतेरे जो विश्वास में दृढ़ थे, गिर जाएँगे।

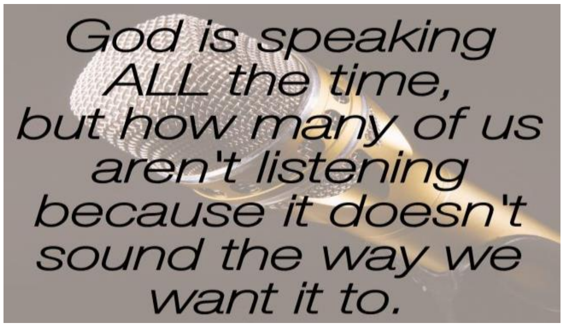

प्रभु हमें कभी—कभी छिपना भी सिखाते हैं। 1 राजा 17:3 "यहाँ से चलकर पूर्व की ओर जा और करीत नामक नाले में जो यरदन के पूर्व में है छिप जा।" यहाँ हम देखते हैं कि यहोवा भविष्यद्वक्ता एलीशा से एक निश्चित अवधि के लिए राजा अहाब से छिपने के लिए कहते है। यहोवा ने उसे यरदन नदी के पास करीत नाले के पास छिपने को कहा। हमारे जीवन में कल्पना कीजिए, यदि प्रभु कहते हैं, सब कुछ छोड़कर जाओ और छिप जाओ, तो क्या हम ऐसा करेंगे? फिर भी, एलीशा तुरंत सब कुछ छोड़कर छिप जाता है। अंत समय के दौरान, वचन कहता है कि यदि तू खेत में हैं, तो अपने कपड़े लेने के लिए अपने घर न लौटना; और यदि तू छत पर हो, तो कुछ लेने को न उतरना (मत्ती 24)। इसी तरह, एलीशा ने परमेश्वर से कोई और प्रश्न नहीं पूछा, परन्तु उसने तुरंत उनकी बात सुनी और जैसा यहोवा चाहते थे वैसा ही किया। हमें अपने प्रभु परमेश्वर की बात सुनने के लिए परमेश्वर की आत्मिक बल और शक्ति की आवश्यकता है। यदि परमेश्वर का प्रेम हमारे भीतर नहीं है, तो हम निश्चित रूप से गिर जाएंगे, और अंत समय में तुरही कितनी भी जोर से क्यों न बजे, हम इसे नहीं सुनेंगे। प्रभु यीशु कहते हैं, *'मैं चारों कोनों से अपने चुने हुए लोगों को इकट्ठा करने आऊंगा।'* दुनिया इसे देखेगी, यहां तक कि जिन्होंने उसे सूली पर चढ़ाया और उस पर विश्वास नहीं किया। उस समय परमेश्वर के चुने हुए कौन होंगे? परमेश्वर के चुने हुए वे होंगे जो उसके प्रेम और आत्मिक सामर्थ्य से भरे होंगे। यहोवा इन्हीं को चुनेंगे, और खाली बरतनों को वह छोड़ देंगे।

यीशु ने अपने शिष्यों को अपनी मृत्यु के बाद तक और पिन्तेकुस्त के दिन तक, जब वे सभी पवित्र आत्मा के साथ आत्मिक रूप से अभिषिक्त हो गए थे, तब तक अपनी सेवकाई शुरू करने की अनुमति नहीं दी। एक बार जब वे पवित्र आत्मा से भर गए, तो उन्होंने अपनी सेवकाई शुरू कर दी। जब तक हम उनके अभिषेक और आत्मारिक सामर्थ्य से भरे हुए नहीं हैं, हम प्रभु के लिए कुछ नहीं कर सकते। लोगों ने, उनके शिष्यों के साथ, यीशु से पूछा कि कौन इसका पालन कर सकता है, क्योंकि यह मार्ग बहुत कठिन है। प्रभु यीशु ने उन्हें आश्वासन दिया कि जबकि यह स्वयं से संभव नहीं था, अपनी पवित्र आत्मा के साथ वे संसार में ये सब काम करने में सक्षम होंगे। इसका अर्थ क्या है? यह जानना महत्वपूर्ण है कि इसमें से कुछ

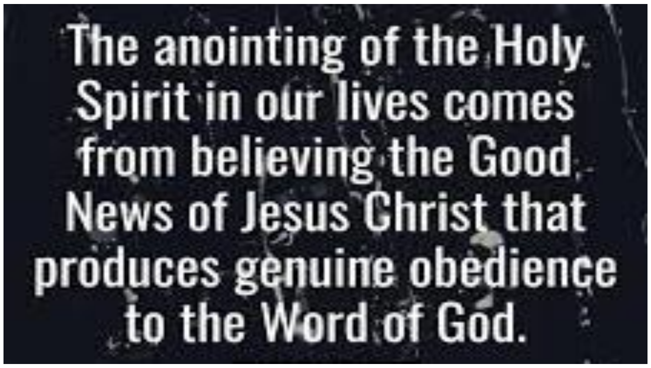

भी मनुष्य की बुद्धि से संभव नहीं है, बल्कि केवल परमेश्वर की बुद्धि और आत्मारिक शक्ति से ही संभव है। हमारा प्रभु हम सभी को अपनी आत्मारिक शक्ति से तैयार कर रहा है। यूहन्ना 15 कहता है, *'पिता परमेश्वर दाख की बारी है, यीशु मसीह सच्ची दाखलता है, और हम डालियाँ हैं।'* यीशु कहते हैं, *'मेरे बिना, तुम कुछ नहीं कर सकते।'* शुरू से ही, यह परमेश्वर का नियम था कि हमारे पापों के लिए कबूतरों की बलि देनी पड़ती थी। जब प्रभु यीशु का बपतिस्मा हुआ और वे पानी से बाहर आए, तो यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने पवित्र आत्मा को कबूतर के समान यीशु पर उतरते देखा। आज भी, यदि हमारे भीतर वही आत्मा है, तो अंत समय में, हम अपनी दौड़ जीत लेंगे!

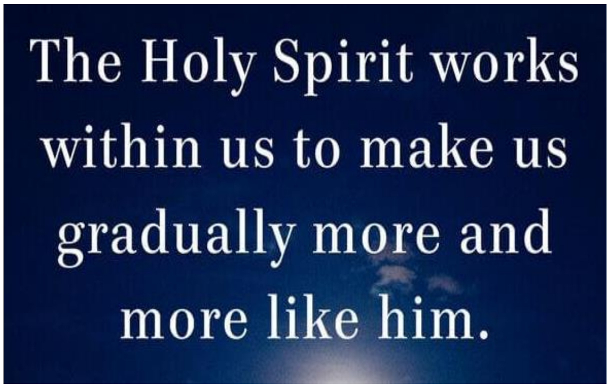

यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला जंगल में रहता था, उन्होंने जीवित रहने के लिए टिड्डियां और जंगली शहद खाया। लूका 1:80 ''और वह बालक बढ़ता और आत्मा में बलवन्त होता गया, और इस्राएल पर प्रगट होने के दिन तक जंगलों में रहा।'' वह जंगल में जा छिपा और ऊँट के बालों के कपड़े पहने। जिस दिन तक वह पवित्र आत्मा से अभिषिक्त और आत्मिक रूप से सामर्थी नहीं हुआ, उस दिन तक वह जंगल में यहोवा के उपस्थिति से अलग रहा। वह तब तक इस्राएलियों के बीच नहीं आया, जब तक कि वह पवित्र आत्मा की शक्ति से बपतिस्मा और अभिषिक्त नहीं हुआ। इसके बाद, वह इस्राएलियों के बीच आया और उन्हें बपतिस्मा देने लगा। मत्ती 3:4 ''यह यूहन्ना ऊँट के रोम का वस्त्र पहिने था, और अपनी कमर में चमड़े का कटिबन्ध बाँधे हुए था। उसका भोजन टिड्डियाँ और वनमधु था।'' प्रभु यीशु ने भी 30 साल की उम्र तक खुद को दुनिया से दूर रखा। एक बार जब उन्होंने बपतिस्मा लिया, और उन्होंने पवित्र आत्मा प्राप्त किया, तब उन्होंने अपनी सेवकाई आरम्भ की। जिस दिन तक उन्होंने पवित्र आत्मा और आत्मिक शक्ति प्राप्त नहीं की, उन्होंने अपनी सेवकाई आरम्भ नहीं की। हमें अपनी आत्मारिक शक्ति प्राप्त करने के लिए अपने पवित्र परमेश्वर के पंखों के नीचे रहने की आवश्यकता है। यदि हम खाली हैं, तो हमें प्रभु के लिए तैयार होने के लिए पवित्र आत्मा से भरे जाने की आवश्यकता है।

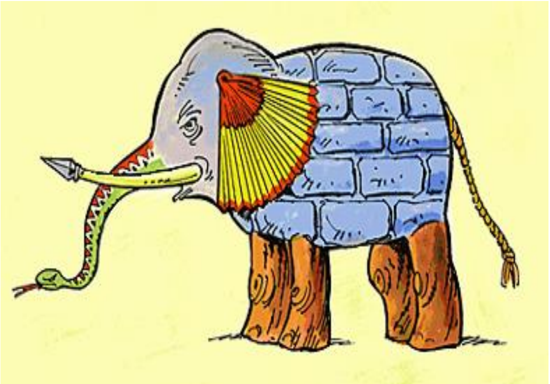

निर्गमन 34:2 ''सबेरे तैयार रहना, और भोर को सीनै पर्वत पर चढ़कर उसकी चोटी पर मेरे सामने खड़ा होना।'' मूसा ने चालीस दिन और रात यहोवा परमेश्वर के सामने उपवास और प्रार्थना में बिताया। उसने यहोवा की आज्ञा मानी और चालीस दिन तक प्रभु के सामने बैठा रहा। परमेश्वर की सामर्थी उपस्थिति में होने के कारण, उसके बाद कुछ समय के लिए मूसा का चेहरा परमेश्वर की महिमा से चमक उठा। लोग उसका चेहरा नहीं

देख सके। क्योंकि मूसा पवित्र आत्मा के अभिषेक से भर गया था और आत्मारिक शक्ति से तैयार था, इसलिए उसने खुद को सबसे अलग रखा।

हमने स्तिफनुस, प्रेरित पौलुस, यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले और मूसा के जीवन को देखा है; जिनमें से सभी ने खुद को एकांत में रखा, लेकिन प्रभु की उपस्थिति में, और इसलिए आत्मारिक रूप से अभिषिक्त और प्रभु की बल और शक्ति से भरे हुए थे। उन्होंने ऐसा क्यों किया? प्रभु के लिए दौड़ जीतने के लिए। हमें अपना जीवन उस तरह नहीं जीना चाहिए जैसे कोई अंधे को रास्ता दिखा रहा हो। उन अंधे आदमियों की कहानी याद रखें जिन्हें पहले कभी हाथी नहीं मिला था, और जिन्होंने कल्पना की और अनुमान लगाया कि हाथी क्या था, बस उसके शरीर के विभिन्न हिस्सों को छूकर? हमें इन अंधों की तरह नहीं होना चाहिए। हमें सच्चाई जाननी चाहिए। स्वर्गिक राज्य को कमाना आसान नहीं है, परमेश्वर की आत्मारिक शक्ति से भरना आसान नहीं है। हमने ऊपर परमेश्वर के चुने हुए लोगों के अद्भुत जीवन को देखा है, कैसे इन लोगों ने संसार का बलिदान किया और स्वयं को इससे दूर रखा, परमेश्वर के साथ एकांत में रहे ताकि परमेश्वर की आत्मिक शक्ति प्राप्त हो। हमारे लिए वचन स्पष्ट है, हमें वचन की सच्चाई के अनुसार चलना चाहिए। परमेश्वर जानते है कि उनके बिना हम कुछ भी नहीं कर सकते हैं, परन्तु उन्होंने हम पर श्वास फूंकी, और उन्होंने हमारा अभिषेक किया। प्रभु हमें इस दुनिया में किसी से भी ज्यादा प्यार करते हैं, एक पति अपनी पत्नी से ज्यादा प्यार करता है या एक पिता अपने बेटे से प्यार करता है। इस दुनिया में प्रभु के प्यार के बराबर कोई प्यार नहीं है। हमारे प्रभु प्यासे, पीड़ित हुए और भूखे लोगों को अपने पास बुला रहे है, और उनमें जीवन के जल की नदियाँ हैं। इस संसार के राजा (शैतान) ने हमें अन्धा कर दिया है। लेकिन हमें प्रभु के पास दौड़ने और उनकी छाया में बैठने, उनकी आत्मारिक शक्ति और अभिषेक प्राप्त करने की आवश्यकता है। इसके बिना, हम कभी भी परमेश्वर के स्वर्गीय राज्य तक नहीं पहुँच सकते।

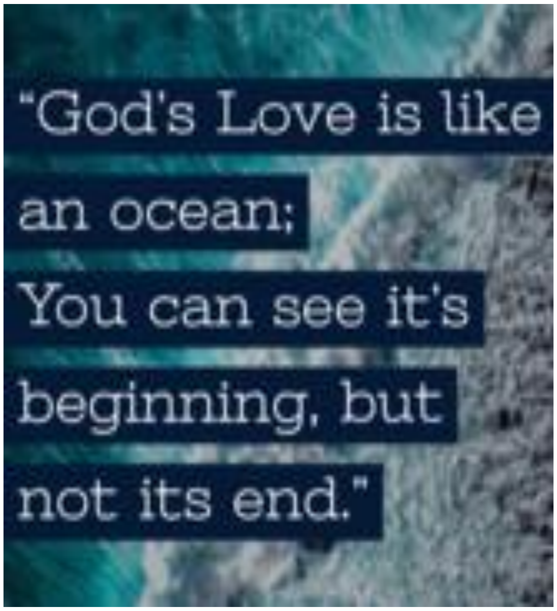

प्रारंभ में, जब कलीसियाओं की संख्या बढ़ी, तो समस्याएँ भी बढ़ीं। प्रेरितों के काम 6:1–4 ''उन दिनों में जब चेलों की संख्या बहुत बढ़ने लगी, तब यूनानी भाषा बोलनेवाले इब्रानी भाषा बोलनेवालों पर कुड़कुड़ाने लगे, कि प्रतिदिन की सेवकाई में हमारी विधवाओं की सुधि नहीं ली जाती। तब उन बारहों ने चेलों की मण्डली को अपने पास बुलाकर कहा, "यह ठीक नहीं कि हम परमेश्वर का वचन छोड़कर खिलाने–पिलाने की सेवा में रहें। इसलिये, हे भाइयो, अपने में से सात सुनाम पुरुषों को जो पवित्र आत्मा और बुद्धि से परिपूर्ण हों, चुन लो, कि हम उन्हें इस काम पर ठहरा दें। परन्तु हम तो प्रार्थना में और वचन की सेवा में लगे रहेंगे।'' मण्डली

कलीसियाओं में कुड़कुड़ाने लगी, परन्तु प्रेरितों ने उन्हें बताया कि उनकी बुलाहट परमेश्वर के वचन की सेवकाई करना और निरन्तर उनकी स्तुति करना है। वे लोगों के लिए काम करने के लिए पवित्र आत्मा और पवित्र ज्ञान से भरे हुए लोगों को नियुक्त करेंगे।

याद रखें, परमेश्वर का कार्य करना एक मामूली काम हो सकता है (कमरे की सफाई करना, पानी और भोजन परोसना, आदि) लेकिन जब तक कार्यकर्ता ज्ञान और पवित्र आत्मा से भरे नहीं होंगे, उन्हें इन कार्यों को करने के लिए नहीं चुना जाएगा। कल्पना कीजिए, अगर हमें अपने परमेश्वर के सामने उनके स्वर्गीय राज्य में खड़ा होना पड़े, तो हमें कितना अधिक उनकी आत्मारिक शक्ति से भरा होना चाहिए।

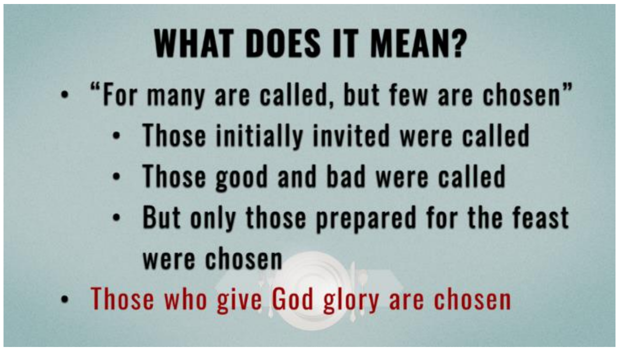

लूका 24:49 ''और देखो, जिसकी प्रतिज्ञा मेरे पिता ने की है, मैं उसको तुम पर उतारूँगा और जब तक स्वर्ग से सामर्थ्य न पाओ, तब तक तुम इसी नगर में ठहरे रहो।'' यीशु मसीह ने अपने शिष्यों को चुना और उनसे कहा कि वे यरूशलेम शहर में तब तक प्रतीक्षा करें जब तक कि वे ऊपर से शक्ति प्राप्त न कर लें। उन्होंने कहा कि जब तक वे पवित्र आत्मा और आत्मारिक शक्ति प्राप्त नहीं कर लेते, तब तक उन्हें अपनी सेवकाई शुरू करने के लिए यरूशलेम को नहीं छोड़ना चाहिए। हम परमेश्वर की आत्मिक शक्ति के बिना अपनी दौड़ नहीं जीत सकते।

प्रभु की सभा का क्या अर्थ है? प्रभु यीशु मसीह ने अपने जीवन और लहू के बलिदान के माध्यम से हमारे पापों की कीमत चुकाई, जिससे इस दुनिया में आत्माओं की कमाई कीं। परमेश्वर ने हम में से प्रत्येक को अपने बहुमूल्य लहू से खरीदा है। इस संसार में लोग पैसे कमाने के लिए, या तो अपने बच्चों को शिक्षित करने के लिए, या अपने लिए घर खरीदने के लिए, या अपने ऋण का भुगतान करने के लिए, आदि के लिए विदेश जाते हैं। इसी तरह, यीशु मसीह ने इस दुनिया में आत्माएँ कमाने और अपने बच्चों की एक मंडली बनाने के लिए अपने स्वर्गीय निवास को छोड़ दिया। उनकी मण्डली उनके लहू से मोल ली गई है, और हम उनकी संपत्ति हैं। इस पवित्र सभा की रक्षा करने के लिए, परमेश्वर की आत्मारिक शक्ति प्राप्त करना महत्वपूर्ण है, जिसके बिना हम कुछ नहीं कर सकते। यीशु ने अपने चेलों को ठीक यही सलाह दी थी। यीशु ने कहा कि उनके चेले इस संसार में तब बाहर जाकर वचन की सेवा कर सकते हैं और परमेश्वर के राज्य के लिए आत्माओं को इकट्ठा कर सकते हैं जब

वे आत्मिक अभिषेक प्राप्त कर लेंगे। यहोवा हमें बताते है कि हम राजा और याजक हैं, और एक शाही पीढ़ी हैं। हम उनके चुने हुए बच्चे और चुनी हुई पीढ़ी हैं। इसलिए, हमें अपने भीतर उनकी आत्मारिक शक्ति की आवश्यकता है, अन्यथा हमारा जीवन व्यर्थ हो जाएगा।

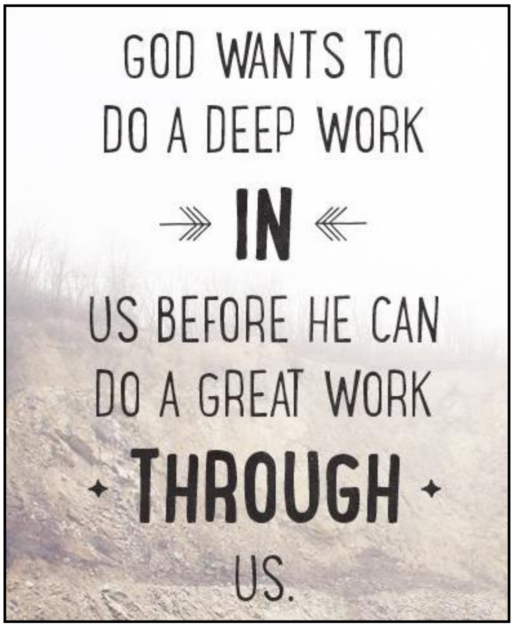

हम सभी परमेश्वर के राज्य को जीतना चाहते हैं, क्योंकि प्रभु ने हमसे वादा किया है कि वह हमारे लिए एक जगह तैयार करने जा रहे है और वह हमें वहां ले जाने के लिए वापस आएंगे। प्रभु ने हमें अपनी आत्मारिक शक्ति मुफ्त में दी है, और हमें इसे खरीदने की आवश्यकता नहीं है। हमें डॉक्टर के पर्चे की जरूरत नहीं है, जैसे हम दवाएं खरीदने के लिए करते हैं। हमारे प्रभु ने वचन में सब कुछ लिखा है, और जब हम अपने जीवन को उसके साथ जोड़ते हैं, तो वह निश्चित रूप से हमें अपनी आत्मारिक शक्ति से भर देंगे।

क्या हम आज तैयार हैं? हाँ, प्रभु हमें एक बार फिर से भरने के लिए तैयार है। वह नहीं चाहते कि हममें से एक भी बर्तन खाली रहे। जब वह इस दुनिया के चारों कोनों से अपने चुने हुओं को लेने आते है, तो हमें इस दुनिया में दौड़ जीतने के लिए उनकी आत्मारिक शक्ति से तैयार होना चाहिए।

प्रभु इस वचन को आशीष दें और हमें भी आशीष दें!

पास्टर सरोजा म।